Godda college, Godda

Name of the teacher	Course	Sem	Subject	Title	Mode
Dr. Pankaj Kumar	B.Ed	II	T.C-204	Projective techniques	Pdf

P.Kumar
21/04/2020

Projective techniques (प्रक्षेपी तकनीक)

प्रक्षेपी तकनीक का जन्म नैदानिक परिस्थितियों (Clinical setting) में हुआ। प्रक्षेपण विधि द्वारा व्यक्तित्व की माप परोक्ष रूप से होती है। इस विधि में व्यक्ति के सामने एक असंरचित उद्दीपक (unstructured stimulus) रखा जाता है। ऐसे उद्दीपनों एवं परिस्थितियों के प्रति व्यक्ति कुछ अनुक्रिया (Response) करता है और उसे यह बतलाने को कहा जाता है कि उसमें वह क्या देख रहा है या कभी-कभी उसे देखकर एक छोटी कहानी आदि भी लिखने को कहा जाता है।

|| असंरचित उद्दीपक वह उद्दीपक होता है जिसका अर्थ प्राय: प्रत्येक व्यक्ति भिन्न-भिन्न ढंग से लगाता है क्योंकि इसमें कुछ सुस्पष्ट वस्तु नहीं होता है।

प्रक्षेपी तकनीक की पूर्व कल्पना (assumption) यह होता है कि जब व्यक्ति इस परीक्षण के असंरचित उद्दीपकों के प्रति अनुक्रिया करता है, तो वह अचेतन रूप से (unconsciously) अपने भावों, संवेगों एवं मानसिक संघर्षों (mental conflicts) को भी अभिव्यक्ति कर पाता है। यहाँ अचेतन शब्द का प्रयोग इसलिए किया जाता है कि व्यक्ति को इस बात का पता नहीं होता है कि वह अपनी अनुक्रियाओं के माध्यम से भावों, संवेगों एवं मानसिक क्रियाओं की अभिव्यक्ति कर रहा है ||

Scanned with CamScanner

स्विट्जरलैण्ड के मनोचिकित्सक (Psychiatrist) हरमान रोशार्क (Hermann Rorschach) 1921 द्वारा निर्मित 'रोशार्क स्याही धब्बा परीक्षण (Ink blot test) प्रक्षेपी परीक्षण का उत्तम उदाहरण है।

प्रक्षेपी परीक्षण का वर्गीकरण (Classification)-

प्रक्षेपी परीक्षण के विभिन्न मनोवैज्ञानिकों ने इसके विभिन्न प्रकार बतलाये हैं। फ्रैंक (Frank, 1939) ने प्रक्षेपी परीक्षणों में उद्दीपकों के प्रति दिए गए अनुक्रियाओं के स्वरूप के आधार पर प्रक्षेपी परीक्षण को पाँच भागों में बाँटा जा सकता है जो निम्नवत् है-

I) संघटनात्मक (Constitutive)
II) रचनात्मक (Constructive)
III) व्याख्यात्मक (Interpretative)
IV) आवर्तक (Refractive)
V) विरेचक (Cathartic)

I) संघटनात्मक (Constitutive) - इस श्रेणी में उन सभी तरह के प्रक्षेपी परीक्षणों को रखा जाता है जिसमें सामग्री या उद्दीपक पर कोई विशेष संरचना के अपनी ओर से स्वतंत्र होकर व्यक्ति बैठाता है या उसपर थोपता है। रोशार्क स्याही परीक्षण एवं मेघाकृति परीक्षण इसके उदाहरण हैं।

II) रचनात्मक - इस श्रेणी में उन सभी परीक्षणों को रखा जाता है जिनमें परीक्षार्थी (testee) को परीक्षक (tester) एक निर्दिष्ट वस्तु की रचना

करने के लिए कहता है। जैसे, परीक्षार्थी को किसी वृक्ष, पुरुष या व्यक्ति का चित्र बनाने के लिए कहा जा सकता है।

(संरचनात्मक (Constitutive) श्रेणी में आने वाले परीक्षणों एवं रचनात्मक श्रेणी में आने वाले परीक्षणों में यह अन्तर यही है कि पहले तरह के परीक्षणों (संरचनात्मक) में परीक्षार्थी को अपने मन से कोई चित्र बनाना होता है और परीक्षक की ओर से कोई दिशा-निर्देश नहीं होता है जबकि दूसरे तरह के परीक्षणों (रचनात्मक) में परीक्षार्थी पर दिशा-निर्देश होता है।)

iii) व्याख्यात्मक (Interpretative) - इस श्रेणी में उन सभी तरह के प्रक्षेपी परीक्षणों को रखा जाता है जिनमें परीक्षार्थी (tester) को अपनी ओर से परीक्षण के उद्दीपक (stimuli) के प्रति विशेष रूप से अर्थ (meaning) जोड़ना होता है। विषय-आत्मबोधन परीक्षण (Thematic Apperception Test या TAT) तथा शब्द साहचर्य परीक्षण (Word Association Test) इस श्रेणी के परीक्षण के प्रमुख उदाहरण हैं।

IV) अपवर्तक (Refractive) - इस श्रेणी में उन सभी तरह के प्रक्षेपी परीक्षणों को रखा जाता है जिनमें परीक्षार्थी अपने व्यक्तित्व की विशेषता, आलेखन एवं हस्तलेखन (handwriting) आदि के माध्यम से व्यक्त करता है। लिपि विज्ञान (Graphology) को अपवर्तक श्रेणी का एक उत्तम उदाहरण माना जाता है।

V) विरेचक (cathartic) - इस श्रेणी में इन सभी तरह के प्रक्षेपी परीक्षणों को रखा जाता है जिसके द्वारा परीक्षार्थी कुछ हस्तचालित कार्य (manipulative task) द्वारा अपनी इच्छाओं, संघर्षों आदि की अभिव्यक्ति करता है। खेल इस श्रेणी का एक उत्तम उदाहरण है।

फ्रैंक (Frank 1939) द्वारा प्रतिपादित प्रक्षेपी परीक्षण के दोष -

⇒ इसकी श्रेणियाँ आपस में इतनी अधिक परस्पराच्छादित (overlapping) है कि उन्हें स्वतन्त्र रूप से समझना तथा अर्थ निकालना सम्भव नहीं है।

⇒ पाठक के मन में संभ्रांति उत्पन्न होती है।

⇒ इस वर्गीकरण द्वारा समस्या का समाधान कम तथा उसमें उलझन अधिक उत्पन्न होता है।

लिण्डजे (Lindzey 1959) ने प्रक्षेपी परीक्षण का दूसरा वर्गीकरण प्रस्तुत किया जो अधिक वैज्ञानिक, अर्थपूर्ण एवं लोकप्रिय है। इन्होंने इसकी वर्गीकरण इस प्रकार है।

(I) साहचर्य प्रविधि (Association techniques)
(II) रचना प्रविधि (construction techniques)
(III) सम्पूरण प्रविधि (completion techniques)
(IV) अभिव्यंजना प्रविधि (Expression techniques)
(V) चयन प्रविधि (choice techniques)

(i) साहचर्य प्रविधि – साहचर्य प्रविधि में उन सभी प्रक्षेपी परीक्षणों को रखा जाता है जिसमें उद्दीपक सामग्रियों को देखने या सुनने के बाद मन में उसके साथ उत्पन्न होने वाला सबसे पहला साहचर्य के बारे में प्रयोज्य (Subject) को बतलाना होता है। रोशार्क परीक्षण, [illegible] परीक्षण तथा शब्द साहचर्य परीक्षण इसके प्रमुख उदाहरण हैं।

(ii) रचना प्रविधि - इस श्रेणी में उन प्रक्षेपी परीक्षणों को रखा जाता है जिनमें प्रयोज्य को दिये गए असंरचित उद्दीपकों जो प्रायः एक अस्पष्ट तस्वीर के रूप में होते हैं को देखकर एक कहानी की रचना करनी होती है। जैसे - आत्मबोधन परीक्षण, बाल आत्मबोधन परीक्षण (Children's Apperception Test, CAT) ब्लैकी चित्रावली (Blacky Pictures) इसके प्रमुख उदाहरण हैं।

(iii) पूर्णता प्रविधि (Completion technique) - इस श्रेणी में उन सभी प्रक्षेपी परीक्षणों को रखा जाता है जिसमें एकांश (Item) के रूप में अधूरे वाक्यों (incomplete sentences) का निर्माण किया जाता है और प्रयोज्य को उसे अपनी ओर से किसी ढंग से पूरा करना होता है। इसके कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं-

(a) मैं समझता हूँ कि मेरी जिन्दगी का मकसद ----

(b) जिन्दगी में मेरी आकांक्षा है कि ______

(c) मैं प्रायः उस समय चिढ़ जाता हूँ जब ----

परीक्षार्थी द्वारा दिये गए उत्तर की विवेचना के बाद उसके व्यक्तित्व का अनुमान लगाया जाता है। [illegible]

(IV) अभिव्यंजन प्रविधि - इस श्रेणी में उन सभी प्रक्षेपी परीक्षणों को रखा जाता है जिनमें परीक्षार्थी को कुछ स्वतन्त्रापूर्वक कार्यों के माध्यम से अपने व्यक्तित्व के शीलगुणों को अभिव्यक्त करना होता है। खेल, चित्रांकन, भूमिका-निर्वाह (role playing) आदि इसके प्रमुख उदाहरण हैं।

|| अभिव्यंजन प्रविधि का एक विशेष गुण यह होता है कि इसमें शोधकर्ता या परीक्षक इस बात पर अधिक ध्यान देता है कि वह दिए गए वस्तुओं या सामग्री को कैसे उलट-पुलटकर या हाथ से इधर-उधर करता है। जैसे- किसी बालक को कुछ गुड़िया खेलने के लिए दे दिया जा सकता है और बालक उन गुड़िया को खेल के दौरान किस ढंग से इधर-उधर करता है इसको शोधकर्ता ध्यान से देखता है और इसके आधार पर परीक्षार्थी के व्यक्तित्व के बारे में अन्दाज लगाया जाता है। ||

(V) चयन प्रविधि - इस श्रेणी के परीक्षण में परीक्षार्थियों को कुछ ऐसे एकांशों या तस्वीरों को दिया जाता है जिनके माध्यम से व्यक्तित्व की विभिन्न मात्राओं का पता चलता है और वह इन एकांशों या तस्वीरों में से कुछ उपयुक्त एवं संगत एकांश या तस्वीर को चुन लेता है। कभी कभी परीक्षार्थी को अपने पसन्द को अभिव्यक्त करने के दौरान उन्हें कोटिबद्ध (rank) भी करना होता है। इसलिए इसे क्रमिक प्रविधि (Ordering technique) भी कहा जाता है।

Scanned with CamScanner

प्रक्षेपी परीक्षण के उपयोग/उपयोगिता -

⇒ प्रक्षेपी परीक्षण का प्रयोग वैज्ञानिक शोध तथा अन्य क्षेत्रों में आसानी से किया जाता है। क्योंकि इनका क्रियान्वयन सरल एवं सुगम है।

⇒ प्रक्षेपी परीक्षण में परीक्षार्थी द्वारा दिए गए उत्तर मौलिक एवं स्वाभाविक होते हैं क्योंकि इनमें बनावटी (Faking) उत्तर देने की आवश्यकता ही महसूस नहीं की जाती है।

⇒ परीक्षार्थी द्वारा दिये गये उत्तरों में से उसके व्यक्तित्व के बारे में भी [illegible] पता चल सकता है। ऐसा परीक्षार्थी को नहीं लगता है।

प्रक्षेपी परीक्षण की परिसीमाएँ (Limitations)-

⇒ वस्तुनिष्ठता - प्रक्षेपी परीक्षण में प्रश्नावली या अन्य कागज-पेंसिल परीक्षणों की तुलना में वस्तुनिष्ठता कम होती है।

⇒ विश्वसनीयता (Reliability) - किसी भी प्रक्षेपी परीक्षण के फलांकन तथा उत्तरों की व्याख्या करने का कोई एक समान मानक नहीं है अतः इनकी विश्वसनीयता कम हो जाती है।

⇒ वैधता (Validity) - इन परीक्षणों की वैधता ज्ञात करने के लिए वैज्ञानिक एवं वस्तुनिष्ठ कसौटी का अभाव है अतः इनकी वैधता संतोषजनक नहीं है।

⇒ परिस्थितिजन्य चर - कुछ परिस्थितिजन्य चरों जैसे परीक्षक का व्यक्तित्व, लिंग-उम्र, किसी खास तरह की स्थिति पर [illegible], मानक निर्देश के परिवर्तन आदि भी प्रक्षेपी परीक्षणों पर प्रतिकूल प्रभाव डालते हैं।

आइजेन्क (Eysenck, 1959) ने प्रक्षेपी परीक्षण को एक मनोवैज्ञानिक शोध के रूप में मूल्यांकन करते हुए निम्नलिखित तथ्यों को उजागर किया है:-

⇒ प्रक्षेपी परीक्षण कोई संगत, अर्थपूर्ण एवं परीक्षण योग्य सिद्धांत पर आधारित नहीं होता है। अतः इसे एक वैज्ञानिक शोध उपकरण नहीं माना जा सकता है।

⇒ प्रक्षेपी परीक्षण के सूचकांकों एवं व्यक्ति के विभिन्न तरह के शील गुणों, आदतों आदि में कोई सहसंबंध नहीं होता पाया गया है।

⇒ प्रक्षेपी परीक्षण द्वारा पहचान किये गए प्रेरकों, संघर्षों, आवश्यकताओं का अर्थ मनोचिकित्सकों एवं अन्य विशेषज्ञों द्वारा व्याख्या करने के बाद एक समान होगी ऐसा कोई प्रमाण नहीं मिलता है।

⇒ प्रक्षेपी परीक्षण में जिन्दगी के विभिन्न क्षेत्रों में सफल सफलता या असफलता के बारे में पूर्वानुमान करने की पर्याप्त क्षमता नहीं है।

उपरोक्त तथ्यों से स्पष्ट होता है कि प्रक्षेपी परीक्षण को एक शोध उपकरण के रूप में एक अनुकूल एवं उपयुक्त उपकरण नहीं समझा गया है। फिर भी इसका प्रयोग मनोवैज्ञानिक शोधों में उसकी सरलता एवं आसानी से प्राप्यता के कारण होता आया है और हो भी रहा है।